भूमिका

प्रस्तुत शोध प्रबंध में संबंध विन्यास में परिवर्तन का दौर आया है जो शोध कार्य को समकालीन बनाता है। अध्ययन की दृष्टि से मैंने अपने शोध प्रबंध को मुख्य रूप से छह अध्यायों में विभाजित किया है। प्रथम अध्याय परिचय के रूप में है जिसमे वर्तमान अध्ययन के लिए प्रासंगिक अवधारणाएँ जैसे कि विकेंद्रीकरण, राजनीतिक सशक्तिकरण, परिभाषाएँ और अनुसूचित जनजातियों की विशेषताएं शामिल है। इस अध्याय में अध्ययन के महत्व, इसके उद्देश्यों, पद्धति के अध्ययन पर भी चर्चा की गई है। दूसरा अध्याय सम्बंधित साहित्य की समीक्षा से है। तीसरा अध्याय पंचायती राज की संस्थाओ की ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य से सम्बंधित कानून एवं संवैधानिक प्रावधानो को शामिल किया गया है। चौथा अध्याय में उत्तरप्रदेश राज्य में पंचायती राज संस्थायें और जनजातियों की सहभागिता का सामाजिक आर्थिक ,जनगणना और पहचान संस्कृति का अवलोकन किया गया है। पांचवा अध्याय में उत्तरप्रदेश के सोनभद्र जिले में पंचायती राज संस्थाओ में जनजातियों की सहभागिता :एक आनुभविक अध्ययन यह अध्याय शोध की विषय वस्तु के दृष्टीकोण से सबसे महत्वपूर्ण है ।छठा अध्याय जो की अंतिम है इसमें निष्कर्ष एवं सुझाव दिया गया है।

शोध करते हुए मैंने यह अनुभव किया कि शोध का बाह्य क्षेत्र जितना आकर्षक होता है उसकी आंतरिक प्रक्रिया उतनी ही जटिल होती है। इस शोध प्रबंध के विषय चयन प्रक्रिया एवं उसे गति व दिशा में कुशल निर्देशन के साथ-साथ शोध संबंधित समस्याओं को परिष्कृत करने के लिए सबसे पहले मैं अपने शोध निर्देशक डॉ शांतेष कुमार सिंह का हार्दिक आभारी हूँ। उन्होंने मुझे शोध के दौरान जो भी समस्याएँ या चुनौतिया उत्पन्न हुई सर ने मुझे उन समस्याओं से जूझना सिखाया। उन्होंने मेरी सीमाओं का मूल्यांकन करते हुए मेरे शोध प्रबंध

को व्यवस्थित स्वरूप देने में सदैव अपनी तत्परता दिखाई। मैं राजनीति विज्ञान विभाग के डॉ राजीव कुमार सिंह सर का भी अपने शोध प्रबंधन में निरंतर समर्थन और सम्यक मार्गदर्शन प्रेरणा के लिए आभार व्यक्त करता हूँ। मैं आशा करता हूँ कि भविष्य में भी इसी प्रकार मुझे आपका मार्गदर्शन मिलता रहेगा।

मुझे शोध कार्य करने की अनुमति देने के लिए अपने राजनीति विज्ञान विभाग के अनुसंधान समिति का भी धन्यवाद करता हूं। मैं विश्वविद्यालय के पुस्तकालय, वित्त और परीक्षा विभाग केअधिकारियों,कर्मचारियों का धन्यवाद करना चाहता हूं जिन्होंने कई बार मुझे अपने शोध कार्य से संबंधित समस्याओं का उपचार किया।

प्रस्तुत शोध प्रबंध के लिए मैं बड़े भाई श्री राहुल चतुर्वेदी जी का भी आभारी हूँ जिनके प्रेरणा स्रोत से मैं उच्च शिक्षा ग्रहण कर पाया।

मैं अपने सभी साथी सहपाठियों दोस्तों को धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने अपना समर्थन तथा प्रतिकूल परिस्थितियों में भी मेरा सहयोग किया।

दिनांक _____

शोधार्थी

सुधाकर चौबे

अनुक्रमांक-180204

राजनीति विज्ञान विभाग

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय